



संदेश

“भारत माँ के भाल पर सजी स्वर्णिम बिंदी हूँ
मैं भारत की बेटी, आप की अपनी हिंदी हूँ।”

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सबको मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिंदी दिवस भारतीय संस्कृति की अनेकता में एकता का प्रतीक है और सभी भारतीय भाषाओं के आपसी सौहार्द का दिवस भी है। किसी भी राष्ट्र, समाज और सभ्यता की पहचान उसकी अपनी भाषा से होती है। भाषा केवल संवाद की ही नहीं अपितु संस्कृति और संस्कारों की संवाहक भी होती है।

हिंदी की व्यापकता और सार्थकता को आज विश्व ने भी स्वीकार किया है। मौजूदा समय में हिंदी का विश्वव्यापी प्रसार हुआ है और यह विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। नए-नए शब्दों को समाहित करने का गुण, बदलते समय के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने का उत्साह इसकी जीवंतता का प्रमाण है।

भारतीय रेल और हिंदी अन्योन्याश्रित हैं। भारतीय रेल का विशाल नेटवर्क हिंदी के प्रसार में निरंतर अग्रणी भूमिका निभाता है जबकि हिंदी का देशव्यापी प्रचार भारतीय रेल को आम जनता की प्रभावी सेवा करने में सहायता करता है।

आज का युग कंप्यूटर एवं सूचना प्रौद्योगिकी का युग है। हिंदी के क्षेत्र में भी कंप्यूटर ने क्रांति की है। इंटरनेट, रेलनेट, यात्री आरक्षण प्रणाली, ई-टिकट, मोबाइल द्वारा टिकट बुकिंग, ई-मेल, रेलवे की वेबसाइट, सोशल मीडिया के साधन, जैसे ट्विटर, फेसबुक ने हिंदी को विश्व पटल पर स्थान दिलाया है। रेल मंत्रालय द्वारा तैयार किया गया “रेल राजभाषा” मोबाइल एप सरकारी काम-काज में हिंदी के प्रयोग में अत्यंत सहायक हो रहा है।

कोविड-19 जैसी वैश्विक महामारी के इस दौर में, पूरे विश्व ने भारतीय संस्कृति का अनुसरण करते हुए ‘नमस्ते’ को अभिवादन के तौर पर प्रयोग करना शुरू कर दिया है जो निस्संदेह भारत के लिए अत्यंत गौरव की बात है। भारत की संस्कृति और भाषाओं की महत्ता को सारा विश्व स्वीकार कर रहा है।

हिंदी दिवस के इस शुभ अवसर पर मैं सभी रेल अधिकारियों/कर्मचारियों से आग्रह करता हूँ कि आप पूरे उत्साह से अपना सरकारी काम-काज यथासंभव हिंदी में ही करने का प्रयास करें।

पीयूष गोयल

पीयूष गोयल